Madani Vasiyyat Nama (Hindi)

म-दनी वसिय्यत नामा

(मअ़ कफ़न व दफ़्न के अह़कामात)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हि़क्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

म-दनी वसिय्यत नामा

येह रिसाला (**म-दनी वसिय्यत नामा**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

म-दनी वसिय्यत नामा

(मअ़ कफ़न दफ़्न के अह़कामात)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह पुरसोज़ रिसाला (15 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपने क़ल्ब में रिक़्क़त व हलचल महसूस करेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। **(الکامل لابن عدی ج۵ص۵۰۰)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस वक़्त नमाज़े **फ़ज्र** के बा'द **मस्जिदुन-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में बैठ कर "**اَرْبَعِيْنَ وَصايا مِنَ الْمَدِيْنَةِ الْمُنَوَّرَةِ**" (या'नी **मदीनए मुनव्वरह** से चालीस[40] वसिय्यतें) तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं, आह ! सद आह !

आज मेरी **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी की आख़िरी सुब्ह़ है, सूरज रौज़ए मह़बूब عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हुवा चाहता है, आह ! आज रात तक अगर **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न मिलने की सूरत न हुई तो मदीने से जुदा होना पड़ जाएगा। आंख अश्कबार है, दिल बे क़रार है, हाए !

अफ़्सोस चन्द घड़ियां त़यबा की रह गई हैं
दिल में जुदाई का ग़म त़ूफ़ां मचा रहा है

आह ! दिल ग़म में डूबा हुवा है, हिज्रे मदीना की जां सोज़ फ़िक्र ने सरापा तस्वीरे ग़म बना कर रख दिया है, ऐसा लगता है गोया होंटों का तबस्सुम किसी ने छीन लिया हो, आह ! अ़न्क़रीब मदीना छूट जाएगा, दिल टूट जाएगा, आह ! मदीने से सूए वत़न रवानगी के लम्ह़ात ऐसे जां गुज़ा होते हैं गोया,

किसी शीर ख़्वार बच्चे को उस की मां की गोद से छीन लिया गया हो और वोह रोता हुवा निहायत ही ह़सरत के साथ बार बार मुड़ कर अपनी मां की त़रफ़ देखता हो कि शायद मां एक बार फिर बुला लेगी..... और शफ़्क़त के साथ गोद में छुपा लेगी..... अपने सीने से चिमटा लेगी..... मुझे लोरी सुना कर अपनी मामता भरी गोद में मीठी नींद सुला देगी..... आह !

मैं शिकस्ता दिल लिये बोझल क़दम रखता हुवा
चल पड़ा हूं या शहन्शाहे मदीना अल वदाअ़

अब शिकस्ता दिल के साथ "चालीस वसाया" अ़र्ज़ करता हूं, मेरे येह वसाया "दा'वते इस्लामी" से वाबस्ता तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की त़रफ़ भी हैं नीज़ मेरी औलाद और दीगर अहले ख़ाना भी इन वसाया पर ज़रूर तवज्जोह रखें ।

ज़ह़े क़िस्मत ! मुझ पापी व बदकार को मदीनए पुर अन्वार में, वोह भी सायए सब्ज़ गुम्बदो मीनार में, ऐ काश ! जल्वए सरकारे नामदार, शहन्शाहे अबरार, शफ़ीए रोज़े शुमार, मह़बूबे परवर दगार, अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत नसीब हो जाए और **जन्नतुल बक़ीअ़** में दो[2] गज़ ज़मीन मुयस्सर आए अगर ऐसा हो जाए तो दोनों जहां की सआ़दतें ही सआ़दतें हैं । आह ! वरना जहां मुक़द्दर.....

﴾1﴿ अगर आ़लमे नज़्अ़ में पाएं तो उस वक़्त का हर काम सुन्नत

के मुताबिक़ करें, मुम्किना सूरत में सीधी करवट लिटा कर चेहरा क़िब्ला रू करें। यासीन शरीफ़ भी सुनाएं और कलिमए त़य्यिबा सीने पर दम आने तक मुसल्सल ब आवाज़ पढ़ा जाए।

﴾2﴿ बा'दे क़ब्ज़े रूह़ भी हर हर मुआ़-मले में सुन्नतों का लिहाज़ रखें, म-सलन तज्हीज़ो तक्फ़ीन वग़ैरा में **ता'जील** (या'नी जल्दी) और ज़ियादा अ़वाम इकठ्ठी करने के शौक़ में ताख़ीर करना सुन्नत नहीं। बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 4 में बयान किये हुए अह़काम पर अ़मल किया जाए। ख़ुसूसन ताकीद अशद ताकीद है कि हरगिज़ नौह़ा न किया जाए क्यूं कि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

﴾3﴿ **क़ब्र** का साइज़ वग़ैरा सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो और लह़द बनाएं कि सुन्नत है।[1]

﴾4﴿ अन्दरूने क़ब्र दीवारें वग़ैरा कच्ची मिट्टी की हों, आग की पक्की हुई ईंटें इस्ति'माल न की जाएं, अगर अन्दर में पक्की हुई ईंट की दीवारें ज़रूरी हों तो फिर अन्दरूनी ह़िस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी त़रह़ लीप दिया जाए।

﴾5﴿ मुम्किन हो तो अन्दरूनी तख़्तों पर **यासीन शरीफ़, सू-रतुल मुल्क** और दुरूदे ताज पढ़ कर दम कर दिया जाए।

﴾6﴿ कफ़ने मस्नून ख़ुद सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के पैसों से हो। ह़ालते फ़क़्र की सूरत में किसी **सह़ीहुल अ़क़ीदा** सुन्नी के माले ह़लाल से लिया जाए।

---

1 : क़ब्र की दो क़िस्में हैं **(1) सन्दूक़ (2) लह़द :** लह़द बनाने का त़रीक़ा येह है कि क़ब्र खोदने के बा'द मय्यित रखने के लिये जानिबे क़िब्ला जगह खोदी जाती है। लह़द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और अगर ज़मीन नर्म हो तो सन्दूक़ में मुज़ा-यक़ा नहीं। हो सकता है गोरकन वग़ैरा मश्वरा दें कि स्लेब अन्दरूनी ह़िस्से में तिरछी कर के लगा लो मगर उस की बात न मानी जाए।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾7﴿ ग़ुस्ल बा रीश, बा इमामा व पाबन्दे सुन्नत इस्लामी भाई ऐ़न सुन्नत के मुत़ाबिक़ दें (सादाते किराम अगर गन्दे वुजूद को ग़ुस्ल दें तो सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ इसे अपने लिये बे अ-दबी तसव्वुर करता है)

﴾8﴿ ग़ुस्ल के दौरान सत्रे औ़रत की मुकम्मल ह़िफ़ाज़त की जाए अगर नाफ़ से ले कर **घुटनों** समेत कथ्थई या किसी गहरे रंग की दो[2] मोटी चादरें उढ़ा दी जाएं तो ग़ालिबन सत्र चमक्ने का एह़तिमाल जाता रहेगा। हां पानी ज़ाहिरी जिस्म के हर ह़िस्से बल्कि रूएं रूएं की जड़ से ले कर नोक पर बहना लाज़िमी है।

﴾9﴿ कफ़न अगर आबे ज़मज़म या आबे मदीना बल्कि दोनों से तर किया हुवा हो तो सआ़दत है। काश ! कोई सय्यिद साह़िब सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजा दें।[1]

﴾10﴿ बा'दे ग़ुस्ले मय्यित, कफ़न में चेहरा छुपाने से क़ब्ल, पहले पेशानी पर अंगुश्ते शहादत से بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم लिखिये।

﴾11﴿ इसी त़रह़ सीने पर : لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾12﴿ दिल की जगह पर : **या रसूलल्लाह** یا رسول اللّٰہ صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾13﴿ नाफ़ और सीने के दरमियानी ह़िस्सए कफ़न पर : **या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, **या इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, **या इमाम अह़मद रज़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ, **या शैख़ ज़ियाउद्दीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहादत की उंगली से लिखें।

﴾14﴿ नीज़ नाफ़ के ऊपर से ले कर सर तक तमाम ह़िस्सए कफ़न पर (इलावा पुश्त के) "मदीना मदीना" लिखा जाए। याद रहे ! येह सब कुछ रोशनाई से नहीं सिर्फ़ अंगुश्ते शहादत से लिखना है और

مدینہ

1 : सिर्फ़ उ़-लमा व मशाइख़ को बा इमामा दफ़्न किया जा सकता है, आ़म लोगों की मय्यित को मअ़ इमामा दफ़्नाना मन्अ़ है।

ज़हे नसीब कोई सय्यिद साहिब लिखें।

﴾15﴿ दोनों[2] आंखों पर **मदीनतुल मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की खजूरों की गुठलियां रख दी जाएं।

﴾16﴿ जनाज़ा ले कर चलते वक़्त भी तमाम सुन्नतें मल्हूज़ रखिये।

﴾17﴿ जनाज़े के जुलूस में सब इस्लामी भाई मिल कर इमामे अहले सुन्नत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़सीदए दुरूद "का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद" पढ़ें। (इस के इलावा भी ना'तें वग़ैरा पढ़ें मगर सिर्फ़ और सिर्फ़ उ-लमाए अहले सुन्नत ही का कलाम पढ़ा जाए)

﴾18﴿ जनाज़ा कोई **सह़ीहुल अ़क़ीदा** सुन्नी आ़लिमे बा अ़मल या कोई सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाई या अह्ल हों तो औलाद में से कोई पढ़ा दें मगर ख़्वाहिश है कि सादाते किराम को **फ़ौक़िय्यत** दी जाए।

﴾19﴿ ज़हे नसीब ! सादाते किराम अपने रह़मत भरे हाथों क़ब्र में उतार कर **अर-ह़मुर्राह़िमीन** के सिपुर्द कर दें।

﴾20﴿ चेहरे की त़रफ़ दीवारे क़िब्ला में त़ाक़ बना कर उस में किसी पाबन्दे सुन्नत इस्लामी भाई के हाथ का लिखा हुवा अ़ह्द नामा, नक़्शे ना'ले शरीफ़, सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ का नक़्शा, श-जरा शरीफ़, नक़्शे हरकारा वग़ैरा **तबर्रुकात** रखिये।

﴾21﴿ **जन्नतुल बक़ीअ़** में जगह मिल जाए तो ज़हे क़िस्मत ! वरना किसी **वलिय्युल्लाह** के क़ुर्ब में, येह भी न हो सके तो जहां इस्लामी भाई चाहें सिपुर्दे ख़ाक करें मगर जाए ग़स्ब पर दफ़्न न करें कि ह़राम है।

﴾22﴿ **क़ब्र** पर अज़ान दीजिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

﴿23﴾ ज़हे नसीब ! कोई सय्यिद साहिब तल्क़ीन फ़रमा दें ।[1]

﴿24﴾ हो सके तो मेरे अहले **महब्बत** मेरी तदफ़ीन के बा'द 12 रोज़ तक, येह न हो सके तो कम अज़ कम 12 घन्टे ही सही मेरी क़ब्र पर हल्क़ा किये रहें और ज़िक्रो दुरूद और तिलावत व ना'त से मेरा दिल बहलाते रहें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नई जगह में दिल लग ही जाएगा इस दौरान भी और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम रखें ।

﴿25﴾ मेरे ज़िम्मे अगर क़र्ज़ वग़ैरा हो तो मेरे माल से और अगर माल न हो तो दर-ख़्वास्त है कि मेरी औलाद अगर ज़िन्दा हो तो वोह या कोई और इस्लामी भाई एह़सानन अपने पल्ले से अदा फ़रमा

مدینہ

1 : तल्क़ीन की फ़ज़ीलत : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम्हारा कोई मुसल्मान भाई मरे और उस को मिट्टी दे चुको तो तुम में एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सुनेगा और जवाब न देगा । फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा, फिर कहे : या फ़ुलां बिन फ़ुलाना ! वोह कहेगा : "हमें इर्शाद कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए ।" मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती । फिर कहे : اُذْكُرْ مَا خَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا: شَهَادَةَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)، وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) نَبِيًّا وَّبِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا۔ तरजमा : "तू उसे याद कर जिस पर तू दुन्या से निकला या'नी येह गवाही कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी और क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी था ।" मुन्कर नकीर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की **ह़ुज्जत** सिखा चुके । इस पर किसी ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो ? फ़रमाया : ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) की त़रफ़ निस्बत करे । (طبرانی کبیر ج۸ ص۲۵۰ حدیث۷۹۷۹) याद रहे ! फ़ुलां बिन फ़ुलाना की जगह मय्यित और उस की मां का नाम ले, म-सलन या मुह़म्मद इल्यास बिन अमीना । अगर मय्यित की मां का नाम मा'लूम न हो तो मां के नाम की जगह ह़व्वा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) का नाम ले । तल्क़ीन सिर्फ़ अ़-रबी में पढ़िये ।

दें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अज़्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाएगा । (मुख़्तलिफ़ इज्तिमाआ़त में ए'लान किया जाए कि जिस किसी की भी दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी हुई हो वोह मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी को मुआ़फ़ फ़रमा दें अगर क़र्ज़ वग़ैरा हो तो फ़ौरन वु-रसा से रुजूअ़ करें या मुआ़फ़ कर दें)

﴾26﴿ मुझे कसरत के साथ ईसाले सवाब व दुआ़ए मग़्फ़िरत से नवाज़ते रहें तो एह़साने अ़ज़ीम होगा ।

﴾27﴿ सब के सब मस्लके आ'ला ह़ज़रत या'नी मज़्हबे अहले सुन्नत पर इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की सह़ीह़ इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ क़ाइम रहें ।

﴾28﴿ बद मज़्हबों की सोह़बत से कोसों दूर भागिये कि इन की सोह़बत ख़ातिमा बिलख़ैर में बहुत बड़ी रुकावट और सबबे बरबादिये आख़िरत है ।

﴾29﴿ ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** और सुन्नत पर मज़्बूत़ी से क़ाइम रहिये ।

﴾30﴿ नमाज़े पन्जगाना, रोज़ए र-मज़ान, ज़कात, ह़ज वग़ैरा फ़राइज़ (व दीगर वाजिबात व सुनन) के मुआ़-मले में किसी क़िस्म की कोताही न किया करें ।

﴾31﴿ **वसिय्यत ज़रूरी वसिय्यत :** दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के साथ हर दम वफ़ादार रहिये, इस के हर रुक्न और अपने हर निगरान के हर उस ह़ुक्म की इत़ाअ़त कीजिये जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो शूरा या दा'वते इस्लामी के किसी भी ज़िम्मेदार की बिला इजाज़ते शर-ई मुख़ा-लफ़त करने वाले से मैं बेज़ार हूं, ख़्वाह वोह मेरा कैसा ही क़रीबी अ़ज़ीज़ हो ।

﴾32﴿ हर इस्लामी भाई हफ़्ते में कम अज़् कम एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करे और हर माह कम अज़् कम तीन दिन, बारह माह में 30 दिन और ज़िन्दगी में **यक मुश्त** कम अज़् कम बारह माह के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करे । हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन अपने किरदार की इस्लाह़ पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के "म-दनी इन्आ़मात" का रिसाला पुर करे और हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाए ।

﴾33﴿ ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मह़ब्बत** व सुन्नत का पैग़ाम दुन्या में आ़म करते रहिये ।

﴾34﴿ बद अ़क़्ली-दगियों और बद आ'मालियों नीज़ दुन्या की बे जा **मह़ब्बत**, माले ह़राम और ना जाइज़ फ़ेशन वग़ैरा के ख़िलाफ़ अपनी जिद्दो जह्द जारी रखिये । हुस्ने अख़्लाक़ और म-दनी मिठास के साथ नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहिये ।

﴾35﴿ ग़ुस्सा और चिड़चिड़ा पन को क़रीब भी मत फटकने दीजिये वरना दीन का काम दुश्वार हो जाएगा ।

﴾36﴿ मेरी तालीफ़ात और मेरे बयान की **केसिटों** से मेरे वु-रसा को दुन्या की दौलत कमाने से बचने की म-दनी इल्तिजा है ।

﴾37﴿ मेरे "तर्के" वग़ैरा के मुआ़-मले में हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल किया जाए ।

﴾38﴿ मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे, ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं ।

﴾39﴿ मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

《40》 बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं। वु-रसा से भी दर-ख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें। अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदके़ मह़शर में ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते़ कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो। (अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो इस की वजह से किसी क़िस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं। अगर "हड़ताल" इस का नाम है कि ज़बर दस्ती कारोबार बन्द करवाया जाए, दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वग़ैरा किया जाए तो बन्दों की ऐसी ह़क़ त-लफ़ियां करना कोई भी **मुफ़्तिये इस्लाम** जाइज़ नहीं कह सकता, इस त़रह़ की हड़ताल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।) काश ! गुनाह बख़्शने वाला ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनहगार को अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल मुआ़फ़ फ़रमा दे। ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब तक ज़िन्दा रहूं इ़श्के़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में गुम रहूं, ज़िक्रे मदीना करता रहूं, नेकी की दा'वत के लिये कोशां रहूं, मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाऊं और बे ह़िसाब बख़्शा जाऊं। **जन्नतुल फ़िरदौस** में प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो। आह ! काश ! हर वक़्त नज़्ज़ारए मह़बूब में गुम रहूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने ह़बीब पर बे शुमार दुरूदो सलाम भेज, इन की तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदार इ़श्के़ मुस्त़फ़ा का साथ हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

''म-दनी वसिय्यत नामा'' पहली बार **मुहर्रमुल ह़राम** 1411 सि.हि. मुताबिक़ 1990 ई. **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से जारी किया था फिर कभी कभी थोड़ी बहुत तरमीम की गई थी, अब मज़ीद बा'ज़ तरामीम के साथ ह़ाज़िर किया है ।

ता़लिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

10 जुमादल ऊला 1434 सि.हि.
23-3-2013

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वसिय्यत बाइसे मग़्फ़िरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ''जो वसिय्यत करने के बा'द फ़ौत हुवा वोह सीधे रास्ते और सुन्नत पर फ़ौत हुवा और उस की मौत तक़्वा और शहादत पर हुई और इस ह़ालत में मरा कि उस की मग़्फ़िरत हो गई ।'' **(ابنِ ماجہ ج۳ص۳۰۴حدیث۲۷۰۱)**

कफ़न दफ़्न का त़रीक़ा

मर्द का मस्नून कफ़न

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस

औ़रत का मस्नून कफ़न

मुन्दरिजए बाला तीन और दो मज़ीद (4) सीना बन्द (5) ओढ़नी । ख़ुन्सा मुश्किल को औ़रत की त़रह़ पांच कपड़े दिये जाएं मगर कुसुम या ज़ा'फ़रान का रंगा हुवा और रेशमी कफ़न इसे ना जाइज़ है ।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 817, 819, عالمگیری ج۱ص۱۶۰،۱۶۱)

कफ़न की तफ़्सील

《1》 **लिफ़ाफ़ा :** या'नी चादर मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें 《2》 **इज़ार :** (या'नी तहबन्द) चोटी (या'नी सर के सिरे) से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़े से इतना छोटा जो बन्दिश के लिये ज़ाइद था 《3》 **क़मीस** (या'नी कफ़नी) गरदन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों। मर्द की कफ़नी कन्धों पर चीरें और औ़रत के लिये सीने की त़रफ़ 《4》 सीना बन्द : पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो।[1]

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 818)

ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा

अगरबत्तियां या लूबान जला कर तीन, पांच या सात बार ग़ुस्ल के तख़्ते को धूनी दें या'नी इतनी बार तख़्ते के गिर्द फिराएं, तख़्ते पर मय्यित को इस त़रह़ लिटाएं जैसे क़ब्र में लिटाते हैं, नाफ़ से घुटनों समेत कपड़े से छुपा दें। (आज कल ग़ुस्ल के दौरान सफ़ेद कपड़ा उढ़ाते हैं और उस पर पानी लगने से मय्यित के सत्र की बे पर्दगी होती है लिहाज़ा **कथ्थई** या गहरे रंग का इतना मोटा कपड़ा हो कि पानी पड़ने से सत्र न चमके, कपड़े की दो तहें कर लें तो ज़ियादा बेहतर) अब नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले दोनों[2] त़रफ़ इस्तिन्जा करवाए (या'नी पानी से धोए) फिर नमाज़ जैसा वुज़ू करवाएं या'नी तीन बार मुंह फिर कोहनियों समेत दोनों हाथ तीन तीन बार धुलाएं, फिर सर का मस्ह़ करें, फिर तीन बार दोनों[2]

1 : उ़मूमन तय्यार कफ़न ख़रीद लिया जाता है उस का मय्यित के क़द के मुत़ाबिक़ मस्नून साइज़ का होना ज़रूरी नहीं येह भी हो सकता है कि इतना ज़ियादा हो कि इसराफ़ में दाख़िल हो जाए, लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि थान में से ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा काटा जाए।

पाउं धुलाएं । मय्यित के वुज़ू में पहले गिट्टों तक हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है, अलबत्ता कपड़े या रूई की फुरेरी भिगो कर दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दें । फिर सर या दाढ़ी के बाल हों तो धोएं । अब बाईं (या'नी उलटी) करवट पर लिटा कर बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा (जो अब नीम गर्म रह गया हो) और येह न हो तो ख़ालिस पानी नीम गर्म सर से पाउं तक बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए । फिर सीधी करवट लिटा कर भी इस त़रह़ करें फिर टेक लगा कर बिठाएं और नरमी के साथ पेट के निचले ह़िस्से पर हाथ फेरें और कुछ निकले तो धो डालें । दोबारा वुज़ू और ग़ुस्ल की ह़ाजत नहीं फिर आख़िर में सर से पाउं तक तीन बार काफ़ूर का पानी बहाएं । फिर किसी पाक कपड़े से बदन आहिस्ता से पोंछ दें । एक बार सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन बार सुन्नत । (ग़ुस्ले मय्यित में बे तह़ाशा पानी न बहाएं आख़िरत में एक क़त़रे क़त़रे का ह़िसाब है येह याद रखें)

मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

कफ़न को एक या तीन या पांच या सात बार धूनी दे दें । फिर इस त़रह़ बिछाएं कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर उस पर तहबन्द और उस के ऊपर कफ़नी रखें, अब मय्यित को इस पर लिटाएं और कफ़नी पहनाएं, अब दाढ़ी (न हो तो ठोड़ी पर) और तमाम जिस्म पर ख़ुश्बू मलें, वोह आ'ज़ा जिन पर सज्दा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक, हाथों, घुटनों और क़दमों पर काफ़ूर लगाएं । फिर तहबन्द उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से **लपेटें** । अब आख़िर में लिफ़ाफ़ा भी इसी त़रह़ पहले उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से **लपेटें** ताकि सीधा ऊपर रहे । सर और पाउं की त़रफ़ बांध दें ।

औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा

कफ़नी पहना कर उस के बालों के दो[2] हिस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दें और ओढ़नी को आधी पीठ के नीचे बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर निक़ाब की त़रह़ डाल दें कि सीने पर रहे । इस का त़ूल आधी पुश्त से नीचे तक और अ़र्ज़ एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हो । बा'ज़ लोग ओढ़नी इस त़रह़ उढ़ाते हैं जिस त़रह़ औ़रतें ज़िन्दगी में सर पर ओढ़ती हैं येह ख़िलाफ़े सुन्नत है । फिर ब दस्तूर तहबन्द व लिफ़ाफ़ा या'नी चादर **लपेटें** । फिर आख़िर में सीनाबन्द पिस्तान के ऊपर वाले हिस्से से रान तक ला कर किसी डोरी से बांधें ।[1]

बा'द नमाज़े जनाज़ा तदफ़ीन[2]

﴿1﴾ जनाज़ा **क़ब्र** से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तह़ब है ताकि मय्यित क़िब्ले की त़रफ़ से **क़ब्र** में उतारी जाए । **क़ब्र** की पाइंती (या'नी पाउं की जानिब वाली जगह) रख कर सर की त़रफ़ से न लाएं[3] ﴿2﴾ ह़स्बे ज़रूरत दो या तीन (बेहतर येह है कि क़वी और नेक) आदमी **क़ब्र** में उतरें । औ़रत की मय्यित मह़ारिम उतारें येह न हों तो दीगर रिश्तेदार येह भी न हों तो परहेज़ गारों से उतरवाएं[4] ﴿3﴾ औ़रत की मय्यित को उतारने से ले कर तख़्ते लगाने तक किसी कपड़े से छुपाए रखें ﴿4﴾ **क़ब्र** में उतारते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें : بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه[5] ﴿5﴾ मय्यित को सीधी करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ले की त़रफ़ कर दें और कफ़न की बन्दिश

مدینہ

1 : आज कल औ़रतों के कफ़न में भी लिफ़ाफ़ा ही आख़िर में रखा जाता है तो अगर कफ़नी के बा'द सीनाबन्द रखा जाए तो भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं मगर अफ़्ज़ल है कि सीनाबन्द सब से आख़िर में हो । 2 : जनाज़ा उठाने और इस की नमाज़ का त़रीक़ा "नमाज़ के अह़काम" में मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये । 3 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 844, 4 : تنویر الابصار ج۳ص۱۶۶ 5 : عالمگیری ج۱ص۱۶۶

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं, न खोली तो भी ह़रज नहीं[1] ﴾6﴿ **क़ब्र** कच्ची ईंटों[2] से बन्द कर दें अगर ज़मीन नर्म हो तो (लकड़ी के) तख़्ते लगाना भी जाइज़ है[3] ﴾7﴿ अब मिट्टी दी जाए, मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों[2] हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। पहली बार कहें مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ[4] दूसरी बार وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ[5] तीसरी बार وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى[6] कहें। अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दें[7] ﴾8﴿ जितनी मिट्टी **क़ब्र** से निकली है उस से ज़ियादा डालना मक्रूह है[8] ﴾9﴿ **क़ब्र** ऊंट के कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाएं चौखुंटी (या'नी चार कोनों वाली जैसा कि आज कल तदफ़ीन के कुछ रोज़ बा'द अक्सर ईंटों वग़ैरा से बनाते हैं) न बनाएं[9] ﴾10﴿ **क़ब्र** एक बालिश्त ऊंची हो या इस से मा'मूली ज़ियादा[10] ﴾11﴿ बा'दे दफ़्न क़ब्र पर पानी छिड़क्ना मस्नून है[11] ﴾12﴿ इस के इलावा बा'द में पौदे वग़ैरा को पानी देने की ग़रज़ से छिड़कें तो जाइज़ है ﴾13﴿ बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की **क़ब्र** पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ मह़्ज़ रस्मी तौ़र पर पानी छिड़क्ते हैं येह इसराफ़ व ना जाइज़ है, फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 9 **सफ़ह़ा** 373 पर है : बे ह़ाजत (क़ब्र पर) पानी का डालना ज़ाएअ़ करना है और पानी ज़ाएअ़ करना जाइज़ नहीं ﴾14﴿ दफ़्न के बा'द सिरहाने الٓمّٓ ता مُفْلِحُوْن और क़दमों की त़रफ़ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्म सूरह तक पढ़ना

मदीना

1 : جوہرہ ص۱۴۰, عالمگیری ج۱ ص۱۶۶ 2 : क़ब्र के अन्दरूनी हिस्से में आग की पक्की हुई ईंटें लगाना मन्अ़ है मगर अक्सर अब सिमेन्ट की दीवारों और स्लेब का रवाज है लिहाज़ा सिमेन्ट की दीवारों और सिमेन्ट के तख़्तों का वोह हिस्सा जो अन्दर की त़रफ़ रखना है कच्ची मिट्टी के गारे से लीप दें। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुसल्मानों को आग के असर से मह़फ़ूज़ रखे। اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم 3 : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 844। 4 : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया। 5 : और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे। 6 : और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे। 7 : جوہرہ ص۱۴۱ 8 : عالمگیری ج۱ ص۱۶۶ 9 : رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۱۶۹ 10 : ایضاً ص۱۶۸ 11 : फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 373।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

मुस्तह़ब है[1] ﴾15﴿ तल्क़ीन कीजिये। (त़रीक़ा सफ़ह़ा 6 के ह़ाशिये पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) ﴾16﴿ क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा[2] ﴾17﴿ क़ब्र के सिरहाने क़िब्ला रू खड़े हो कर अज़ान दीजिये।[3]

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	गुस्ले मय्यित का त़रीक़ा	11
कफ़न दफ़्न का त़रीक़ा	10	मर्द को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा	12
मर्द का मस्नून कफ़न	10	औ़रत को कफ़न पहनाने का त़रीक़ा	13
औ़रत का मस्नून कफ़न	10	बा'द नमाज़े जनाज़ा तदफ़ीन	13
कफ़न की तफ़्सील	11	मआख़िज़ो मराजेअ़	15

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
طبرانی کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت
ابن عدی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
جوہرہ	باب المدینہ کراچی	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
تنویرالابصار	دارالمعرفۃ بیروت	حدائقِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

مدینہ

1 : جوہرہ ص ١٤١, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 846 2 : رَدُّالْمُحتار ج ٣ ص ١٨٤ 3 : माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 370

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बोल में हलके तोल में भारी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : दो कलिमे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को प्यारे, ज़बान पर हलके और मीज़ाने अ़मल में भारी हैं, वोह येह हैं:

سُبْحٰنَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحٰنَ اللهِ الْعَظِيْمِ۔

(بُخاری حدیث ۷۵۶۳)

मक-त-बतुल मदीना
मक्तبة المدينة
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net